सप्तम् अध्याय

शोध सारांश, शोध प्राप्तियाँ, निष्कर्ष एवं सुझाव

7.1 शोध सारांश

मनुष्य एक स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर जन्म लेता है तथा उसकी मूल प्रवृत्ति भी स्वतंत्र आस्तित्व के रूप में आचरण करना ही है। स्वतंत्रता व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों के विकास हेतु अत्यन्त आवश्यक है। इस पर रोक लगाने से व्यक्ति की सृजनशील शक्तियाँ कुण्ठित हो जाती हैं तथा प्रतिस्पर्धा की भावना दब जाती है कार्य के प्रति उत्साह घट जाता है जिससे व्यक्ति के साथ समाज के विकास में भी बाधा पहुँचती है। दुर्भाग्यवश ऐसा है कि जन्म के पश्चात् जैसे ही व्यक्ति सामाजीकरण की प्रक्रिया से गुजरता है वह स्वयं को विभिन्न बंधनों से आबद्ध पाता है। यह बंधन प्रकृति द्वारा न लगाकर समाज के ही कुछ प्रभुत्व सम्पन्न वर्ग द्वारा अपने से निम्न वर्ग पर लगाये जाते रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व भारत में कुछ ऐसी ही स्थिति दलित, शोषित अपवंचित वर्ग की थी जहाँ उन्हें समस्त प्राकृतिक, मौलिक व मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया गया था।

भारतीय समाज में व्याप्त इन बुराइयों को दूर करने के लिये विभिन्न महापुरूषों व समाज–सुधारकों ने संघर्ष किये हैं, जिनमें महात्मा ज्योतिराव फुले का संघर्ष एवं योगदान अविस्मरणीय है। उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत में प्रचलित ऊँच–नीच भेदभाव, अस्पृश्यता, असमानता तथा शोषण को जड़ से समाप्त करने में व पीड़ित व्यक्तियों को मानवीय अधिकार दिलाने में समर्पित कर दिया। महात्मा ज्योतिराव फुले स्वयं इन समस्याओं से पीड़ित थे क्योंकि उनका जन्म अस्पृश्य समाज में ही हुआ था, जहाँ व्यक्ति को कोई भी मानवीय अधिकार प्राप्त नहीं थे।

इन विषम सामाजिक परिस्थितियों के मध्य महात्मा ज्योतिराव फुले ने अपनी शिक्षा पूर्ण की। फुले के ज्ञान का आधार मात्र पुस्तकीय ज्ञान ही नही था वरन् उन्होने जीवन के अनुभवों से व बौद्धिक व्यक्तियों के सानिध्य से तर्कपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति की। टॉमस पेन की पुस्तक 'राइट्स ऑफ मैन' को पढ़कर उनके जीवन की दिशा ही बदल गयी तथा मानव गरिमा, सामाजिक न्याय व समानता की प्रतिस्थापना को उन्होंने अपना जीवन ध्येय स्वीकार किया।

महात्मा ज्योतिराव फुले मानवतावादी दर्शन में विश्वास रखते थे। उनके जीवन मूल्य मानव कल्याण, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्यायपूर्ण व्यवस्था, विकेन्द्रीकृत संरचना, शोषण रहित समाज, वसुधैव कुटुम्बकम आदि दार्शनिक विचारों पर केन्द्रित थे। उन्होने धर्म की व्याख्या भी मानवीय दृष्टि से की है और महात्मा बुद्ध के समान अनित्यवाद को स्वीकार किया है। महत्मा ज्योतिराव फुले बुद्धिवादी थे अतः वह प्रत्येक आयाम को तर्क व बुद्धि की कसौटी पर कसकर देखते थे तथा उसी को अंतिम सत्य मानते थे।

यदि महात्मा ज्योतिराव फुले के कृतित्व पर दृष्टि डालते है तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनके जीवन का मूल लक्ष्य अछूतोद्धार था। अछूतोद्धार हेतु महात्मा फुले ने भारत की सामाजिक व्यवस्था का गहन अध्ययन व विश्लेषण किया तथा निष्कर्ष निकाला कि इस अपवंचित वर्ग की कुदशा का प्रमुख कारण उनकी अज्ञानता है। चूँकि उन्हे सदियो से शिक्षा के प्रकाश से विमुख रखा गया है अतः वह अपने अधिकारों से भी पूर्णतः अपरिचित हो चुके हैं। ज्योतिराव फुले का सामाज सुधार के सम्बंध में प्रथम प्रयास अपवंचित वर्ग को शिक्षित करने का था। उन्होने शूद्रातिशूद्र व महिलाओं की

शिक्षा के लिये अथक प्रयास किये। फुले शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त अभिकरण मानते थे। वह भली–भॉति जानते थे कि अपवंचित वर्ग की समस्त समस्यओं की जड़ अशिक्षा है। जब तक अशिक्षा को दूर करने के लिये कोई ठोस आधार प्रदान नही किया जाता तब तक यह वर्ग अपने विकास की गति में पीछे ही रहेगा।

महात्मा ज्योतिराव फुले परम्परागत शिक्षा के विरोधी थे क्योंकि परम्परागत शिक्षा में असमानता, धार्मिक अंधविश्वास व रूढ़िवादी प्रवृत्तियाँ व्याप्त थी। अतः उन्होने शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन का मत व्यक्त किया। उनका मूल उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से ऐसी व्यवस्था की स्थापना करना था जो व्यक्तियों के मध्य जाति व वर्ग भेद की दीवारों को तोड़कर सम्पूर्ण मानवता को एक सूत्र में पिरो सके। ज्योतिराव फुले 12 वर्ष तक के बालको हेतु निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा को आवश्यकता पर बल देते थे उनकी शिक्षा का स्वरूप सार्वभौमिक, सामान्य, मौलिक व सरल है।

महात्मा गाँधी ने भी अपनी बेसिक शिक्षा योजना में 7–14 वर्ष के बालकों को निःशुल्क शिक्षा का प्रस्ताव रखा था। डॉ0 भीमराव अम्बेडकर व अन्य संविधान निर्माताओं ने इन महान आत्माओं के विचारों से प्रभावित होकर भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों (अनु0 45) में इन विचारों को स्थान प्रदान किया। राज्य के संसाधनों में वृद्धि के साथ ही वर्तमान समय में 6–14 वर्ष बालकों के लिये निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा को मूल अधिकारों (अनु0 21 A) के अन्तर्गत स्थान प्रदान किया गया है।

महात्मा ज्योतिराव के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक न्याय व मानवगरिमा की स्थापना है। महात्मा ज्योतिराव फुले शिक्षा के माध्यम से नागरिकों का चरित्र निर्माण व उन्हें आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु फुले ने धर्मनिरपेक्ष गुणात्मक पाठ्यचर्या का निर्माण किया है। वह पाठ्यचर्या में भाषा ज्ञान तथा रोजगार परक विषयों को विशेष महत्व प्रदान करते है। शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार हेतु ज्योतिराव फुले ने शिक्षक प्रशिक्षण तथा विद्यालयों के औचक निरीक्षण का मत व्यक्त किया है।

ज्योतिराव फुले छात्रों को उनकी रूचि, प्रकृति व स्वाभावानुसार ज्ञान प्रदान करने के पक्षधर थे। उनका विचार था कि शिक्षकों को अपने समस्त छात्रों के साथ समानता पूर्ण व न्याय संगत व्यवहार करना चाहिए तथा उन्हे मानवतावादी शिक्षण विधियों जैसे– खेल विधि, पर्यटन विधि, प्रयोग प्रदर्शन विधि, कथात्मक विधि के माध्यम से प्रेम पूर्वक ज्ञान प्रदान करना चाहिए। महात्मा ज्योतिराव फुले ने तत्कालीक शिक्षा व्यवस्था व विद्यालयों की स्थिति की हण्टर आयोग (1882) को दिये प्रतिवेदन में विस्तार से चर्चा की है तथा Indigenous School 'स्वदेशी विद्यालय' की स्थिति में मात्रात्मक व गुणात्मक सुधार के विषय में अपने सुझाव प्रस्तुत किया है।

स्त्री शिक्षा के सम्बंध में महात्मा ज्योतिराव फुले का मत था कि पुरूषों तथा स्त्रियों की शिक्षा में कोई विभेद नहीं होना चाहिए। स्त्रियों की शिक्षा पुरूषों की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि एक स्त्री के शिक्षित होने का अर्थ है सम्पूर्ण परिवार का शिक्षित होना। 19 वीं शताब्दी में स्त्री अनेक विषम परिस्थितियों से घिर चुकी थी

बाल विवाह, सती प्रथा, परदा प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, बालहत्या, विधवा, केशवपन, शिक्षा पर प्रतिबंध आदि क्रूर एवं अमानवीय प्रथाओं के कारण उनका जीवन नारकीय हो गया था। महात्मा ज्योतिराव फुले ने स्त्रियों की प्रगति का माध्यम शिक्षा को माना व अनेक बालिका विद्यालयों की स्थापना की। जिनमें वह स्वयं तथा उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले (प्रथम दलित शिक्षिका) शिक्षण कार्य करते थे। स्त्रियों की स्थिति में सुधार हेतु ज्योतिराव फुले ने विभिन्न सामाजिक आन्दोलन भी चलाए। जिसके अर्न्तगत उन्होंने बाल विवाह, सती प्रथा, केशव मुण्डन प्रथा, बहुपत्नी प्रथा का कठोर विरोध किया। उन्होने विधवाओं की सुरक्षा हेतु 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' की स्थापना की। महात्मा ज्योतिराव फुले ने किसानों की स्थिति तथा उनके साथ होने वाले शोषण, अन्याय व अत्याचार को भी अपने चिंतन का आधार बनाया। ज्योतिराव ने तत्कालीन किसानों की समस्याओं का अध्ययन कर अत्यंत मौलिक एवं समाधानपरक सुझाव अपने प्रतिवेदन में प्रस्तुत किये है। वह किसानों को शिक्षित कर उन्हे सरकारी नौकरी में स्थान दिलाने के पक्ष में थे। उन्होने किसानों के बालको के लिये कृषि शिक्षा की विशेष रूपरेखा भी प्रस्तुत की है।

महात्मा ज्योतिराव फुले ने 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। सत्यशोधक समाज के माध्यम से उन्होने अपने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक सुधारों को आगे बढ़ाया। ज्योतिराव फुले ब्राह्मणी व्यवस्था, अंधविश्वास, आडम्बर, अस्पृश्यता आदि का विरोध किया तथा अपवंचित वर्ग को इन कुरीतियों के प्रति जाग्रत किया।

ज्योतिराव फुले के शैक्षिक व सामाजिक विचार अत्यन्त प्रासंगिक हैं। भारतीय संविधान में वर्णित अनेक तथ्य उनके चिंतन से प्रभावित दिखायी पड़ते है। ज्योतिराव ने 19 वीं शताब्दी में ही अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा, जनशिक्षा, शिक्षा व नौकरी में आरक्षण, छात्रवृत्ति की व्यवस्था, रोजगारपरक शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण व निरीक्षण जैसे क्रांतिकारी विचारो का सूत्रपात किया था जो वर्तमान में भी दिशा सूचक का कार्य कर रहे हैं। महात्मा ज्योतिराव के चिंतन व कार्यो का उनके अनुवर्ती विचारकों डॉ0 भीमराव अम्बेडकर व महात्मा गाँधी पर विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। डॉ0 भीमराव अम्बेडकर व महात्मा गाँधी ने आजीवन अछूताद्वार के लिये आन्दोलन चलाया व समाज में व्याप्त आडम्बर, ऊँच–नीच आदि बुराईयों को दूर करने का कार्य किया। ज्योतिराव फुले की भांति इन महापुरूषों ने भी शिक्षा को सामाजिक समरसता स्थापित करने का सशक्त माध्यम स्वीकार किया है।

प्रस्तुत शोध विषय ''आधुनिक परिप्रेक्ष्य के महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन'' का अध्ययन करने के पश्चात् सारांश रूप में कहा जा सकता है महात्मा ज्योतिराव फुले के सम्पूर्ण विचारों का केन्द्र बिन्दु मानव है। मानव को समूह से पृथक नहीं किया जा सकता है। प्रकृति ने समस्त मानव प्राणियों को एक समान समझा है। अतः जब प्रकृति ने मानव के साथ कोई विभेद नही किया है तो मानव को मानव से विभेद का कोई अधिकार प्राप्त नही है। महात्मा ज्योतिराव फुले के समग्र चिंतन का सार रूप भी यही है।

7.2 शोध प्राप्तियां–

प्रस्तुत शोध अध्ययन ''आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन'' शीर्षक के सन्दर्भ में शोधकर्ता द्वारा जो उद्देश्य निर्धारित किये गये थे उन्ही को आधार बनाकर शोध कार्य किया गया। प्रस्तुत शोध से सम्बंधित निम्नलिखित शोध प्राप्तियाँ ज्ञात हुयी–

1. महात्मा ज्योतिराव के चिंतन का केन्द्रविन्दु अपवंचित वर्ग रहा है, उन्होने अनवरत् उनके उत्थान हेतु संघर्ष किया और समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये प्रयासरत रहे।
2. ज्योतिराव के सम्पूर्ण जीवन संघर्ष का लक्ष्य सामाजिक समानता, न्याय व मानवीय अधिकारों की स्थापना था।
3. महात्मा ज्योतिराव फुले के जीवन दर्शन में ऊँच–नीच, संकीर्णता, भेदभाव, असमानता आदि का कठोर शब्दों में विरोध किया गया है।
4. महात्मा ज्योतिराव फुले ने 24 सितम्बर 1873 ई0 को 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। जिसका उद्देश्य शूद्रातिशूद्रों व महिलाओं को सदियों से चली आ रही मानसिक, सामाजिक, धार्मिक गुलामी से मुक्त कराना, शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना व मानवाधिकारों की रक्षा करना था।
5. महात्मा ज्योतिराव फुले ने 1863 ई0 में विधवा स्त्रियों के नवजात शिशुओं के जन्म व पालन पोषण हेतु 'बाल हत्या प्रतिबंधक गृह' की स्थापना की। जिसका उद्देश्य विधवाओं की स्थिति में सुधार व भ्रूण हत्या पर रोक लगाना था।

6. महात्मा ज्योतिराव फुले ने सती प्रथा व विधवा मुंडन प्रथा पर प्रतिबंध हेतु अनेक प्रयास किये। उन्होने विधवा मुंडन करने वाले मुम्बई व पूना शहर के लगभग 500 नाइयों की सभा बुलाकर यह अमानवीय व अशोभनीय कार्य करने से इंकार करने के लिये प्रेरित किया।

7. ज्योतिराव ने विधवा पुनर्विवाह को मान्यता दिलाने हेतु आन्दोलन चलाया।

8. ज्योतिराव का दर्शन मानवतावादी था।

9. महात्मा ज्योतिराव फुले ने निःशुल्क व अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की जिसका स्वरूप मौलिक व व्यवहारिक हो।

10. फुले ने माध्यमिक व उच्च शिक्षा को रोजगारपरक बनानें पर बल दिया है जिससे नवयुवक आत्मनिर्भर बन सकें।

11. महात्मा ज्योतिरव फुले के शैक्षिक विचारों का आधार स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व, नैतिकता व मानवता है अतः उनके शिक्षा के उद्देश्य भी इन्ही मूल्यों के विकास से सम्बंधित है।

12. महात्मा ज्योतिराव फुले ने आधुनिक युग की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुये मातृभाषा व अंग्रेजी भाषा दोनो का ज्ञान आवश्यक माना है।

13. ज्योतिराव फुले ने कृषि शिक्षा हेतु विशेष रूपरेखा तैयार की है तथा उसे मूल शिक्षा से जोड़ने पर बल दिया जिससे कृषक वर्ग कृषि की नवीन तकनीकियों व प्रणालियों को सीखकर अपनी स्थिति में सुधार कर सके।

14. महात्मा ज्योतिराव फुले ने शिक्षक प्रशिक्षण व विद्यालय निरीक्षण को महत्वपूर्ण माना है जिससे शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार किया जा सके।

15. ज्योतिराव फुले ने शिक्षा द्वारा छात्रों में आदर्श व मूल्यों के विकास पर बल दिया है। वह नैतिक शिक्षा को पाठ्यचर्या में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते है।

16. महात्मा ज्योतिराव फुले दण्डात्मक अनुशासन का विरोध करते थे उनके अनुशासन का स्वरूप 'स्व' व 'आत्मप्रेरित' है।

17. महात्मा ज्योतिराव फुले ने शिक्षा को माध्यम बनाकर आडम्बर, अस्पृश्यता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता व कर्मकाण्डो का जोरदार शब्दों मे ंखण्डन किया है।

18. महात्मा ज्योतिराव फुले ने 'स्वच्छता' व 'स्वास्थ्य' के महत्व को स्वीकार किया है तथा दलितो, शूद्रातिशूद्रो को स्वच्छता व स्वास्थ्य जैसे विषयों के प्रति जागृत करने का प्रयास किया जिससे वे अपने जीवन स्तर में सुधार ला सके।

19. महात्मा ज्योतिराव ने लैगिंक विभेदीकरण को दूर करने का मत व्यक्त किया है क्योकि समाज में स्त्रियों को सदियो से हीन दृष्टि से देखा जाता रहा है। उनका मानना था कि शिक्षा इस विभेदीकरण को दूर करने का महत्वपूर्ण उपकरण हो सकती है।

20. उनके शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

21. महात्मा ज्योतिराव फुले ने मानवतावादी शिक्षण विधि के रूप में तार्किक चिंतन, अनुभव व वैज्ञानिक दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण माना है।

22. ज्योतिराव फुले ने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व मनोवैज्ञानिक समानता की बात की है और शिक्षा इस समानता को प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन है।

23. फुले ने शिक्षक को शिक्षा प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। उनका मत था कि शिक्षक मात्र ब्राह्मण वर्ग के ही न हो वरन् समाज के समस्त वर्गो से चयनित किये जाने चाहिए जिससे वे बिना भेदभाव किये सबको समान शिक्षा प्रदान कर सके।

24. ज्योतिराव फुले ने शास्त्रों में वर्णित पूजा, यज्ञ, हवन व कर्मकाण्डों का विरोध किया तथा अपने 'सार्वजनिक सत्य धर्म ग्रन्थ' में पूजा, अर्चना, विवाह, अन्तिम संस्कार आदि की नवीन विधियों व मंत्रो का उल्लेख भी किया है।

25. ज्योतिराव फुले बुद्धिप्रमाणवाद में विश्वास करते थे उनका ईश्वर तथा धर्म सम्बंधी दृष्टिकोण तर्क व वैज्ञानिकता पर आधारित था।

26. महात्मा ज्योतिराव फुले ने बालिका विद्यालय स्थापित किया व अपनी पत्नी को स्वयं सुशिक्षित कर प्रथम दलित शिक्षिका बनने का गौरव भी प्रदान किया।

27. महात्मा ज्योतिराव फुले ने समाज में जागरूकता लाने हेतु जन सामान्य की भाषा में व्यवहारिक साहित्य का सृजन किया। इस साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों के प्रति लोगो को सचेत किया है।

28. डा0 भीमराव अम्बेडकर महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। डा0 अम्बेडकर ने उनके अस्पृश्यता उन्मूलन व सामाजिक सामानता की स्थापना के आन्दोलन को विस्तार दिया।

29. महात्मा ज्योतिराव फुले व महात्मा गाँधी के चिंतन में अनेक समानतायें हैं जैसे रोजगारपरक शिक्षा, नैतिकता का विकास व सामाजिक असमानता का विरोध।

30. महात्मा ज्योतिराव फुले व डा0 भीमराव अम्बेडकर ने शूद्रों व महिलाओं की दयनीय स्थिति के लिये हिन्दू धमशास्त्रों जिम्मेदार ठहराया है जबकि महात्मा गाँधी का मत इस संदर्भ में भिन्न है।

7.3 निष्कर्ष–

जब समाज मे बुराइयाँ अपनी चरम पराकाष्ठा पर होती है। असमानता, अंधविश्वास, शोषण, भ्रष्टाचार, निर्धनता आदि विकराल रूप धारण कर लेती है तथा मानव ही मानवता का शत्रु बन जाता है। इस स्थिति में समाज में समस्त प्रकार से निराशा व्याप्त हो जाती है फलस्वरूप किसी न किसी नवीन विचारधारा का जन्म होता है जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र को एक नयी दिशा प्रदान करती है। इससे समाज में नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों का विकास होता है। ऐसी ही विचारधारा की गति में महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का उदय हुआ। तत्कालीन समाज में अस्पृश्यता, निर्धनता, आडम्बर, अंधविश्वास, असमानता, शोषण, वैमनस्यता आदि अपनी उच्चतम् सीमा पर थे। समाज में व्याप्त इन कुरीतियों के कारण

मानवता कराह रही थी। ऐसी विभत्स परिस्थितियों में महात्मा ज्योतिराव फुले ने शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने व समाज को जागरूक करने हेतु अनेक प्रयास किये।

महात्मा ज्योतिराव फुले ऐसे समाज सुधारक, दार्शनिक व शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने तत्कालीन समाज से सम्बन्धित प्रत्येक समस्या के निदान हेतु अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया है। महात्मा ज्योतिराव फुले ने इन समस्त समस्याओं से संघर्ष हेतु एक मात्र अस्त्र चुना, वह था शिक्षा। उनका विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा अपवंचित वर्ग को मानवीय अधिकारों का ज्ञान प्रदान करना अति आवश्यक है क्योंकि जब वह अपने अधिकारों को समझेगें तभी उनकी प्राप्ति हेतु संघर्ष करेंगे तभी संघर्ष का प्रतिफल उनके जीवन स्तर व समाज में सकारात्मक परिवर्तन के रूप में प्राप्त होगा। उन्होने निम्नवर्ग में शिक्षा के प्रसार, अस्पृश्यता निवारण, नारी उत्थान, कृषि की स्थिति में सुधार, विधवाओं के जीवन स्तर में सुधार आदि क्षेत्रों में अनेक सराहनीय कार्य किये।

ज्योतिराव फुले ने सम्पूर्ण समाज व्यवस्था में अर्थात् सामाजिक संरचना में परिवर्तन लाने के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। वह सामाजिक व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन के समर्थक थे इसलिए उन्होंनें अन्य समाज सुधारकों के समान केवल अनिष्ट व रूढ़िवादी परम्परा पर ही प्रहार नहीं किया अपितु उन कारणों व उपायों पर भी प्रकाश डाला जिनसे समाज व्यवस्था के इस परम्परागत ढांचे में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

ज्योतिराव फुले ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी साधन बनाकर धर्मग्रन्थ, वर्ण व जाति व्यवस्था, नारी–दासता, मूलभूत शोषण की व्यवस्था के विरूद्ध अपने विचार प्रस्तुत किये। फुले ने अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के अनुरूप स्वतंत्रता, समानता, व न्याय पर आधारित एक सुनियोजित शिक्षा योजना समाज के समक्ष प्रस्तुत की तथा उसको अपने संघर्षों व प्रयासों द्वारा क्रियान्वित भी किया।

ज्योतिराव फुले के विचार मानवता, तर्क व वैज्ञानिकता पर आधारित है जो समस्त स्थान, काल व परिस्थितियों में प्रासंगिक है। वह ऐसे रचनात्मक समाज की संरचना के पक्षधर थे जिसमें द्वेष, वर्ग–संघर्ष, धार्मिक उन्माद, शोषण और अत्याचार का कोई स्थान न हो वरन् सर्वत्र समानता, प्रेम, बंधुत्व नैतिकता व मानव गरिमा जैसे मूल्यों की स्थापना हो।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महात्मा ज्योतिराव फुले का चिंतन वर्तमान शिक्षा एवं उसकी व्यवस्था हेतु प्रासंगिक है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जहाँ शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षा के माध्यम, शिक्षा की भूमिका एवं संकल्पना में नित नये परिवर्तन हो रहे हैं महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक एवं सामाजिक विचार इन परिवर्तनो को उचित दिशा एवं दशा प्रदान कर सकते हैं।

7.4 सुझाव–

दर्शन शब्द संस्कृत भाषा की दृश् धातु से बना है जिसका अर्थ है 'यथार्थतत्वमनेन्' अर्थात् यथार्थ तत्व व अंतिम सत्य की खोज करना या अनुभूति

करना। इस प्रकार दर्शन का सम्प्रत्यय ज्ञान की प्राप्ति या आत्म संतुष्टि तक सीमित नही है बल्कि इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण मानव कल्याण की भावना निहित है। इसी दृष्टिकोण के अनुसार जब किसी शोधकर्ता द्वारा कोई शोधकार्य किया जाता है तो उससे प्राप्त निष्कर्षो को मानव कल्याण से सम्बंधित अन्य क्षेत्रों में कैसे क्रियान्वित किया जाए इसकी व्याख्या करना भी शोधकर्ता हेतु अनिवार्य होता है। जिससे प्राप्त ज्ञान व निष्कर्षो की उपयोगिता सिद्ध हो सके। शोधकर्ता का यह कर्तव्य होता है कि शोध कार्य के पूर्ण होने पर शोध की नवीन समस्याओं को प्रस्तुत करे जिससे कि इस क्षेत्र में अन्य शोधकर्ताओं को शोध दृष्टि मिल सके। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित प्रमुख सुझाव प्रस्तुत हैं–

- **समाज के लिये–**

1. आधुनिक प्रगतिशील समाज में अनेक विषमताएं व्याप्त हैं। महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक एवं सामाजिक दर्शन से यदि सहायता ली जाए तो इन विषमताओं का निराकरण किया जा सकता है।
2. मानवतावादी चिंतन की अभिकल्पना के अनुसार भारतीय समाज स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, मानव गरिमा व न्याय की भावना पर आधारित होना चाहिए। इस दृष्टि से समाज पुर्नरचना में महात्मा ज्योतिराव फुले का चिंतन समाज को प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

- **सरकार हेतु सुझाव–**

1. सरकार अपने सर्वशिक्षा अभियान जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों को ज्योतिराव फुले के शैक्षिक दर्शन से प्रेरणा लेकर नयी दिशा प्रदान कर सकती है।
2. सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में उनके विचारों से उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सकती है क्योकि ज्योतिराव फुले ने शिक्षा के समस्त आयामों पर अत्यंत तर्कपूर्ण व प्रगतिशील विचार प्रस्तुत किये हैं।

- **शैक्षिक संस्थाओं एवं शिक्षाविदों हेतु सुझाव–**

1. शिक्षक व शैक्षिक संस्थाओ द्वारा महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का विश्लेषण करने व समाज में उनकी उपयोगिता सिद्ध करने के सन्दर्भ में कार्यशाला व संगोष्ठी का आयोजन किया जा सकता है।
2. शैक्षिक संस्थाएं महात्मा ज्योतिराव फुले के साहित्य से अपने पुस्तकालय को समृद्ध कर सकती हैं।

- **भावी शोधार्थियों हेतु सुझाव–**

प्रत्येक शोध अध्ययन के पश्चात् बहुत से ऐसे तथ्य, विचार व शोध समस्याएं निकलकर आती हैं जो शोधार्थियों को भविष्य में नवीन शोध कार्यो हेतु दिशा निर्देश प्रदान करती हैं। प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से भावी शोधार्थियों को समस्या चयन व उनके क्रियान्वन हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है–

1. महात्मा ज्योतिराव फुले का अन्य समकालीन विचारकों के साथ शैक्षिक व सामाजिक संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन।
2. महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक, सामाजिक विचारो व कार्यो का डॉ0 भीमराव अम्बेडकर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. महात्मा ज्योतिराव फुले के स्त्री शिक्षा सम्बंधी विचारों की वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
4. महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक व सामाजिक विचारों का अन्य आधुनिक विचारकों के कार्यो एवं विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सामाजिक परिवर्तन की दिशा निर्धारण के सन्दर्भ में महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।